भारत सरकार

परमाणु ऊर्जा विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या-260

उत्तर दिनांक - 24/07/2024 को दिया गया

उच्च गुणवत्ता वाली कैंसर-परिचर्या

260. श्री बृजमोहन अग्रवाल

क्या प्रधानमंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :-

(क) रोगियों को वहनीय लागत पर उच्च गुणवत्ता वाली कैंसर-परिचर्या सुनिश्चित करने के लिए किए जा रहे विशिष्ट उपायों का ब्यौरा क्या है;

(ख) विगत चार वर्षों के दौरान कैंसर-परिचर्या के क्षेत्र में आरम्भ किए गए विशिष्ट अनुसंधान परिणामों का ब्यौरा क्या है; और

(ग) राष्ट्रीय कैंसर ग्रिड की कैंसर-परिचर्या में किस प्रकार की भूमिका है और इसके केंद्रों, अनुसंधान संस्थानों आदि की राज्य-वार सूची क्या है?

उत्तर

राज्य मंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन तथा प्रधानमंत्री कार्यालय (डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) टीएमसी द्वारा रोगियों को उच्च गुणवत्ता की कैंसर देखभाल को सुनिश्चित करने के लिए कार्यान्वित किए जा रहे विशिष्ट उपायों का ब्यौरा निम्नानुसार है :

परमाणु ऊर्जा विभाग के तत्वावधान में एक सहायता प्राप्त संस्थान टाटा स्मारक केंद्र (टीएमसी) 60:40 अनुपात के अद्वितीय मॉडल का पालन करते हुए किफायती लागत पर उच्च गुणवत्ता की कैंसर देखभाल प्रदान कर रहा है, जिसके तहत 60% रोगी अत्यधिक आर्थिक सहायता पर इलाज या लगभग निःशुल्क इलाज प्राप्त कर रहे हैं और शेष 40% निजी रोगी अपने इलाज के लिए भुगतान करते हैं। निजी रोगियों के लिए भी दरें देश के निजी अस्पतालों द्वारा प्रभारित दरों की तुलना में कम हैं।

1) किफायती लागत और बुनियादी ढांचे की उपलब्धता के आधार पर कैंसर प्रबंधन के लिए स्रोत आधारित दिशानिर्देश।

2) दिशानिर्देशों को आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबी-पीएमजेएवाई) से जोड़ा गया है जिससे एबी-पीएमजेएवाई लाभार्थियों के लिए देखभाल सुविधा की गुणवत्ता सुनिश्चित हो सके।

3) राष्ट्रीय कैंसर ग्रिड (एनसीजी) द्वारा शल्य पैथोलॉजी गुणवत्ता आश्वासन कार्यक्रम निदान, जो सभी प्रतिभागी केंद्रों पर सही निदान सुनिश्चित करने में मदद करता है, का मानकीकरण।

4) गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम जो सभी देखभाल पथमार्गों की गुणवत्ता में सुधार के लिए केंद्रों को प्रशिक्षित करता है।

5) सभी उच्च मूल्य की कैंसर-रोधी दवाओं के लिए समूह समझौता बातचीत जिसके परिणामस्वरूप औसतन 82% भाव में कमी आई है और दवाओं की पहुंच और दवाओं का खर्च वहन करने के सामर्थ्य में सुधार हुआ है।

6) उच्च गुणवत्ता की कैंसर देखभाल उपलब्ध कराने के लिए देश भर के नर्सों, विकृतिविज्ञानियों और तकनीशियनों सहित स्वास्थ्य देखभाल व्यवसायियों का प्रशिक्षण।

7) किसी भी स्थान पर किसी भी कैंसर केंद्र में सभी पेचिदा कैंसर मामलों के लिए कैंसर विशेषज्ञों की एक बहुविषयक टीम से निदान और इलाज पर इनपुट प्रदान करने के लिए वर्चुअल ट्यूमर बोर्ड।

(ख) पिछले चार वर्षों में कैंसर देखभाल के क्षेत्र में टीएमसी द्वारा शुरू किए गए विशिष्ट अनुसंधान परिणाम का विवरण निम्नलिखित है :

1) इलाज दरों को बढ़ाने के लिए बाल्यावस्था तीव्र लिम्फोब्लास्टिक ल्यूकीमिया के उपचार का इष्टतमीकरण - विश्व में कहीं भी अब तक किया गया सबसे बड़ा परीक्षण।

2) सामान्य कैंसरों के लिए किफायती उपचार विकल्प प्रदान करने के लिए दवाओं (एस्पिरिन, मेटफॉर्मिन और करक्यूमिन) का पुनर्प्रयोजन।

3) उच्च गुणवत्ता का कैंसर अनुसंधान करने के लिए कैरियर की शुरूआत में अर्बुद विशेषज्ञ (ऑन्कोलॉजिस्ट) को प्रशिक्षित करना। अब तक 400 से अधिक अर्बुद विशेषज्ञ (ऑन्कोलॉजिस्ट) प्रशिक्षित किए जा चुके हैं।

4) स्थानीय एनेस्थेटिक के पेरी-ट्यूमरल अंतःसरण का प्रभाव : शल्य चिकित्सा से पहले स्तन ट्यूमर के आसपास स्थानीय एनेस्थेसिया को इंजेक्ट करने के साधारण हस्तक्षेप के साथ टीएमसी द्वारा किए गए एक प्रमुख यादृच्छिक नियंत्रित परीक्षण (आरसीटी) से इलाज की दरों में 26% की वृद्धि हुई। प्रतिवर्ष 1,00,000 लोगों की जान बचाने की आशा है।

5) टीएमसी ने एक अध्ययन किया है – 'टीएमसी अध्ययन – टीएनबीसी में प्लेटिनम' जिसे टेक्सास में विश्व के सबसे बड़े और सबसे महत्वपूर्ण स्तन कैंसर परिसंवाद - सैन

एंटोनियो स्तन कैंसर संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया, जिसमें सिद्ध किया गया कि प्लेटिनम नामक एक सस्ती दवा स्तन कैंसर की इलाज दर में सुधार करती है।

6) बड़े योग यादृच्छिक नैदानिक परीक्षण से सिद्ध होता है कि योग, स्तन कैंसर वाली महिलाओं में जीवन की गुणवत्ता और इलाज की दर को बढ़ाता है, योग से रोग-मुक्त अस्तित्व (डीएफएस) में 15% और योग हस्तक्षेप के बाद समग्र अस्तित्व (ओएस) में 14% सापेक्ष सुधार हुआ (नायर एनएस एवं अन्य)।

7) सीएआर टी-कोशिका चिकित्सा :

   i. पहले स्वदेशी सीएआर टी-कोशिका चिकित्सा उत्पाद को विकसित करने के लिए टीएमसी और आईआईटी (बी) के बीच सहयोग।
   ii. भारत में तीव्र लिम्फोब्लास्टिक ल्यूकेमिया के रोगी के लिए पहली सीएआर टी-कोशिका चिकित्सा 4 जून, 2021 को एक्ट्रेक में की गई।
   iii. लिम्फोमा के एक रोगी के लिए पहली सीएआर टी-कोशिका चिकित्सा 21 जून, 2021 को टीएमएच में की गई।
   iv. उपरोक्त 2 परीक्षणों के कारण दिसंबर 2023 में डीसीजीआई से स्वदेशी रूप से विकसित सीएआर टी उत्पाद का अनुमोदन और व्यावसायीकरण हुआ।

8) निम्न डोज प्रतिरक्षा चिकित्सा : प्रगत अवस्था के सिर और गर्दन के कैंसर के उपचार के लिए प्रतिरक्षा चिकित्सा व्यवस्था अपनी उच्च लागत के कारण केवल 1% से 3% रोगियों के लिए उपलब्ध है। टीएमसी के शोधकर्ताओं ने एक प्रतिरक्षा चिकित्सा व्यवस्था विकसित की है जो परिणामों और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करती है। इससे उपचार की लागत रुपए 60 से 70 लाख प्रति वर्ष से कम होकर रुपए 5 लाख प्रति वर्ष तक हो गई है। यह इस प्रकार के पहले यादृच्छिक अध्ययन में सिद्ध हुआ और इस संबंध में संयुक्त राज्य अमेरिका में वार्षिक एएससीओ बैठक में एक पोडियम प्रस्तुति दी गई और अब इसे उन लोगों के देखभाल का एक वैकल्पिक मानक माना जाता है जिनकी पूरी डोज तक पहुंच नहीं है। अन्य कैंसरों के लिए निम्न डोज प्रतिरक्षा चिकित्सा की जांच करने हेतु रास्ते खुल गए हैं।

9) न्यूट्रास्यूटिकल 'एक्टोसाइट' : परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा न्यूट्रास्यूटिकल 'एक्टोसाइट' के लांच से कैंसर इलाज में बदलाव आना निर्धारित है। परमाणु ऊर्जा विभाग ने मेसर्स आईडीआरएस लैब्स प्राइवेट लिमिटेड, बेंगलुरु के सहयोग से एक खाद्य पूरक/ न्यूट्रास्यूटिकल 'एक्टोसाइट' लांच किया है जिसका उद्देश्य विकिरण चिकित्सा से गुजरने वाले कैंसर रोगियों के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाना है।

एक्टोसाइट को भारतीय खाद्य संरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) से अनुमोदन प्राप्त हुआ है, जिसने असाधारण परिणाम दर्शाए हैं, विशेष रूप से विकिरण-चिकित्सा प्रेरित दुष्प्रभावों से पीडित श्रोणि कैंसर रोगियों में यह उत्पाद भारत में

किफायती कैंसर इलाज की दिशा में एक ऐतिहासिक योगदान होगा और अब एक्टोसाइट गोलियां बाजार में उपलब्ध होगी। एक्टोसाइट गोलियों के विकास को डीएई में दशकों के वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा समर्थित किया गया है।

(ग) राष्ट्रीय कैंसर ग्रिड (एनसीजी) का विकास वर्ष 2012 में पूरे भारत के सभी रोगियों को उच्च गुणवत्ता की कैंसर देखभाल प्रदान करने और एक समान मानक बनाने के व्यापक दृष्टिकोण से किया गया। अब एनसीजी 340 कैंसर केंद्रों, अनुसंधान संस्थानों, रोगी पक्षपोषण समूहों, परोपकारी संगठनों और व्यावसायिक संस्थाओं के एक बड़ा नेटवर्क में विकसित हो गया है। एनसीजी के सदस्य संगठनों के बीच यह नेटवर्क प्रतिवर्ष 8,50,000 से अधिक नए रोगियों का उपचार करता है, जो भारत के कुल कैंसर रोगियों का लगभग 60% है। भारत में कैंसर देखभाल के सभी हितधारकों को शामिल करते हुए, यह कैंसर की रोकथाम में एक मजबूत, एकीकृत और शक्तिशाली साधन है।

1) सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 17 केंद्रों से 320 केंद्रों तक नेटवर्क का विस्तार (https://ncgindia.org पर राज्यवार सूची)।

2) कैंसर देखभाल को रोकथाम से उपचार तक बेहतर बनाने हेतु डिजिटल प्रौद्योगिकियों का उपयोग करने के लिए कोइटा सेंटर ऑफ डिजिटल ऑन्कोलॉजी (एक धर्मार्थ फाउंडेशन द्वारा वित्तपोषित) की स्थापना। यह आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के साथ पूर्ण संरेखण में है।

3) सभी कैंसर नीतियों एवं राष्ट्रीय कैंसर नियंत्रण योजना के दिशा-निर्देश हेतु एकीकृत डाटा संग्रहण एवं एकत्रीकरण – एक "राष्ट्रीय कैंसर डाटाबेस"। पांच सामान्य कैंसरों के लिए प्रारंभिक डेटाबेस स्थापित किए गए।

4) रोगी के घर के पास कैंसर देखभाल प्रदान करने के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकीय कंपनियों के साथ साझेदारी।

5) कैंसर के कारण, नए कैंसर-रोधी उपचार और निवारक प्रौद्योगिकियों की पहचान और विकास को समझने के लिए एनसीजी में राष्ट्रीय ट्यूमर ऊतक बायोबैंक की शुरुआत।

*****